विद्यापति

4. रूप वर्णन

"सैसव–जौवन दुहु मिलि गेल, सवनक पथ दुहु लोचन लेल।
विद्यापति कह तुहु अगेआनि, दुहु एक जोग इ हके कह सयानि।।"

शब्दार्थ – सैसव – शैशव, बचपन, जौवन – यौवन, सवनक पथ दुहु लोचन लेल – दोनों आँखों ने कानों की राह पकड़ ली, लहु लहु – मन्द मन्द, हास – हँसी, परगास – प्रकाश, मुकुर – दर्पण , सुरत – विहार – सुन्दर रति में विहार करना, रति–कीड़ा, काम– कीड़ा, कइर – कैसी, निरजन – निर्जन, एकान्त में, उरज – उरोज, वक्ष, हेरइ – देखती है, कत बेरि – कितनी बार, एकाधिकबार, बदरि – बेर का फल, नवरंग – नारंगी, अनँग – कामदेव, अगोरल – अगोरते हुए, रखवाली करना, पेखल – देखा, अपरूब – अपूर्व, भेला – भया, हुआ, के कह – कौन कहता है ?

प्रसंग – प्रस्तुत पद में कवि विद्यापति ने नायिका की वयःसंधि –वेला के सौन्दर्य का वर्णन किया है।

व्याख्या – कवि विद्यापति ने नायिका के वयःसंधि–वेला के सौन्दर्य का वर्णन करते हुए कहा है कि नायिका के शरीर में शैशव और यौवन दोनों का संगम हो गया है। अब उसके दोनों नेत्र कानों तक फैल गये हैं। उसके वचन में चतुराई और मंद–मंद मुस्कान आ गई है। उसे देखकर प्रतीत होता है कि धरती पर चाँद की चाँदनी बिखरी है। अब दर्पण लेकर श्रृंगार करती है। वह अपनी सखियों से पूछती है कि काम –कीड़ा कैसी होती है ?

वह एकान्त में अपने उभरते हुए वक्ष को न जानें कितनी बार देखती है और अपने पयोधर को निहार कर मुग्ध हो जाती है। उसके वक्ष पहले बेर फल के आकार के थे, फिर नारंगी के फल के आकार के हो गये। अब उनपर कामदेव ने पहरा डाल दिया है।

हे माधव ! मैंने उस अपूर्व बाला को देखा है, जिसके शैशव और यौवन दोनों मिलकर एक हो गये हैं। विद्यापति उस सखि से कहते हैं कि तुम अज्ञानी हो, इनदानों के संयोग को ही सयानी कहते हैं। अब वह नायिका सयानी हो गई है।

विशेष – वयःसंधि का यह उत्कृष्ट वर्णन है। इसमें नववयस्क के हाव–भाव एवं देहयष्टि का सूक्ष्म और स्वभाविक वर्णन हुआ है। इस पद के समक्ष बिहारी या अन्य श्रृगारिक कवियों के वर्णन फीके प्रतीत होते हैं। बिहारी लाल ने भी श्रृंगार का ऐसा वर्णन किया है–

छुटी न शिशुता की झलक, जोवन झलक्यो अंग।
दीपत देह दुहून मिलि, दिपत ताफत अंग।।

शब्द –चयन में भी कवि विद्यापति ने अपने काव्य–कौशल का परिचय दिया है। फलों की रखवाली के लिये अगोरना शब्द का ही प्रयोग होता है। यहाँ अगोरना शब्द का सटीक प्रयोग हुआ है।

Scanned by CamScanner